

سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ

Surah 3 — Aal-i-Imraan (The Family of Imraan) • Medinan • 200 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अलिफ़ लाम मीम

2

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

अल्लाह ही वह (खुदा) है जिसके सिवा कोई क़ाबिले परस्तिश नहीं है वही ज़िन्दा (और) सारे ज़हान का सँभालने वाला है

3

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ

(ऐ रसूल) उसी ने तुम पर बरहक़ किताब नाज़िल की जो (आसमानी किताबें पहले से) उसके सामने मौजूद हैं उनकी तसदीक़ करती है और उसी ने उससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते तौरत व इन्ज़ील नाज़िल की

4

مِن قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ

और हक़ व बातिल में तमीज़ देने वाली किताब (कुरान) नाज़िल की बेशक जिन लोगों ने खुदा की आयतों को न माना उनके लिए सख्त अज़ाब है और खुदा हर चीज़ पर ग़ालिब बदला लेने वाला है

5

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ ۚ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ

बेशक खुदा पर कोई चीज़ पोशीदा नहीं है (न) ज़मीन में न आसमान में

6

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

वही तो वह खुदा है जो माँ के पेट में तुम्हारी सूरत जैसी चाहता है बनाता है उसके सिवा कोई माबूद नहीं

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ ءَايَاتٌ ۖ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ
 مُتَشَبِّهَاتٌ ۚ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ ۖ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَبَّهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ
 وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۚ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَالرَّسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ ءَامَنَّا
 بِهِ ۚ كُلٌّ ۚ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُو۟لُوا۟ ۚ ۚ الْأَلْبَابِ

वही (हर चीज़ पर) ग़ालिब और दाना है (ए रसूल) वही (वह खुदा) है जिसने तुमपर किताब नाज़िल की उसमें की बाज़ आयतें तो मोहकम (बहुत सरीह) हैं वही (अमल करने के लिए) असल (व बुनियाद) किताब है और कुछ (आयतें) मुतशाबेह (मिलती जुलती) (गोल गोल जिसके मायने में से पहलू निकल सकते हैं) पस जिन लोगों के दिलों में कज़ी है वह उन्हीं आयतों के पीछे पड़े रहते हैं जो मुतशाबेह हैं ताकि फ़साद बरपा करें और इस ख्याल से कि उन्हें मतलब पर ढाले लें हालाँकि खुदा और उन लोगों के सिवा जो इल्म से बड़े पाए पर फ़ायज़ हैं उनका असली मतलब कोई नहीं जानता वह लोग (ये भी) कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए (यह) सब (मोहकम हो या मुतशाबेह) हमारे परवरदिगार की तरफ़ से है और अक्ल वाले ही समझते हैं

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ

(और दुआ करते हैं) ऐ हमारे पालने वाले हमारे दिल को हिदायत करने के बाद डॉवाडोल न कर और अपनी बारगाह से हमें रहमत अता फ़रमा इसमें तो शक ही नहीं कि तू बड़ा देने वाला है

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ ۚ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ

ऐ हमारे परवरदिगार बेशक तू एक न एक दिन जिसके आने में शुबह नहीं लोगों को इक्ठ्ठा करेगा (तो हम पर नज़रे इनायत रहे) बेशक खुदा अपने वायदे के खिलाफ़ नहीं करता

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ ۚ وَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ وَقُودُ النَّارِ

बेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया इस्तेयार किया उनको खुदा (के अज़ाब) से न उनके माल ही कुछ बचाएंगे, न उनकी औलाद (कुछ काम आएगी) और यही लोग जहन्नुम के ईंधन होंगे

كَذَّابٍ ءَالٍ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ
وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ

(उनकी भी) क्रौमे फिरऔन और उनसे पहले वालों की सी हालत है कि उन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया तो खुदा ने उन्हें उनके गुनाहों की पादाश (सज़ा) में ले डाला और खुदा सख्त सज़ा देने वाला है

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبُسَّ الْمِهَادُ

(ऐ रसूल) जिन लोगों ने कुफ़ इस्वेयार किया उनसे कह दो कि बहुत जल्द तुम (मुसलमानों के मुकाबले में) मग़लूब (हारे हुए) होंगे और जहन्नुम में इकट्ठे किये जाओगे और वह (क्या) बुरा ठिकाना है

قَدْ كَانَ لَكُمْ ءَايَةٌ ۚ فِي فِتْنَةِ الْقَتَا ۚ فِتْنَةٌ ۚ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ ۚ
يَرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَأَىٰ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصَرِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً ۚ
لِّأُولَٰئِكَ الْأَبْصُرُ

बेशक तुम्हारे (समझाने के) वास्ते उन दो (मुखालिफ़ गिरोहों में जो (बद्र की लड़ाई में) एक दूसरे के साथ गुथ गए (रसूल की सच्चाई की) बड़ी भारी निशानी है कि एक गिरोह खुदा की राह में जेहाद करता था और दूसरा काफ़िरों का जिनको मुसलमान अपनी आँख से दुगना देख रहे थे (मगर खुदा ने क़लील ही को फ़तह दी) और खुदा अपनी मदद से जिस की चाहता है ताईद करता है बेशक आँख वालों के वास्ते इस वाक़ये में बड़ी इबरत है

زَيْنَ النَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۚ ذَلِكَ مَتَّعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللَّهُ
عِنْدَهُ ۚ حُسْنُ الْمَأْبَ

दुनिया में लोगों को उनकी मरग़ूब चीज़ें (मसलन) बीवियों और बेटों और सोने चाँदी के बड़े बड़े लगे हुए ढेरों और उम्दा उम्दा घोड़ों और मवेशियों और खेती के साथ उलफ़त भली करके दिखा दी गई है ये सब दुनियावी ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) फ़ायदे हैं और (हमेशा का) अच्छा ठिकाना तो खुदा ही के यहाँ है

﴿ قُلْ أُوْنِبِكُمْ بِخَيْرٍ ﴾ ﴿ مِّنْ ذٰلِكُمْ ﴾ ﴿ لِّلَّذِيْنَ اَتَّقَوْا ﴾ ﴿ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّتْ ﴾ ﴿ تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ﴾ ﴿ وَرِضْوٰنٌ ﴾ ﴿ مِّنَ اللّٰهِ ﴾ ﴿ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ ﴾ ﴿ بِالْعِبَادِ ﴾

(ऐ रसूल) उन लोगों से कह दो कि क्या मैं तुमको उन सब चीज़ों से बेहतर चीज़ बता दूँ (अच्छा सुनो) जिन लोगों ने परहेज़गारी इस्तेयार की उनके लिए उनके परवरदिगार के यहाँ (बेहिश्त) के वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं (और वह) हमेशा उसमें रहेंगे और उसके अलावा उनके लिए साफ सुथरी बीवियाँ हैं और (सबसे बढ़कर) खुदा की खुशनूदी है और खुदा (अपने) उन बन्दों को खूब देख रहा है जो दुआएँ माँगा करते हैं

﴿ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اِنَّا ءَاْمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَفِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴾

कि हमारे पालने वाले हम तो (बेताम्मुल) ईमान लाए हैं पस तू भी हमारे गुनाहों को बख्श दे और हमको दोज़ख के अज़ाब से बचा

﴿ الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴾

(यही लोग हैं) सब्र करने वाले और सच बोलने वाले और (खुदा के) फ़रमाबरदार और (खुदा की राह में) खर्च करने वाले और पिछली रातों में (खुदा से तौबा) इस्तग़फ़ार करने वाले

﴿ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهُٗ ﴾ ﴿ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُوْۤا۟لُوْا۟ ﴾ ﴿ الْعِلْمُ قَائِمٌ ﴾ ﴿ بِالْقِسْطِ ﴾ ﴿ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴾

ज़रूर खुदा और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने गवाही दी है कि उसके सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं है और वह खुदा अद्ल व इन्साफ़ के साथ (कारखानाएँ आलम का) सँभालने वाला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वही हर चीज़ पर) ग़ालिब और दाना है (सच्चा) दीन तो खुदा के नज़दीक यकीनन (बस यही) इस्लाम है

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ أَلْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

और अहले किताब ने जो उस दीने हक़ से इस्तेलाफ़ किया तो महज़ आपस की शरारत और असली (अम्र) मालूम हो जाने के बाद (ही क्या है) और जिस शख्स ने खुदा की निशानियों से इन्कार किया तो (वह समझ ले कि यकीनन खुदा (उससे) बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۚ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا ۚ أَلْكِتَابَ
وَالْأُمِّيِّينَ ۚ أَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا ۚ فَقَدْ أَهْتَدُوا ۚ ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا ۚ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ
الْبَلْغُ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۚ بِالْعِبَادِ

(ऐ रसूल) पस अगर ये लोग तुमसे (स्वाह मा स्वाह) हुज्जत करे तो कह दो मैंने खुदा के आगे अपना सरे तस्लीम खम कर दिया है और जो मेरे ताबे है (उन्होंने) भी) और ऐ रसूल तुम अहले किताब और जाहिलों से पूछो कि क्या तुम भी इस्लाम लाए हो (या नहीं) पस अगर इस्लाम लाए हैं तो बेखटके राहे रास्त पर आ गए और अगर मुंह फेरे तो (ऐ रसूल) तुम पर सिर्फ़ पैग़ाम (इस्लाम) पहुंचा देना फ़र्ज़ है (बस) और खुदा (अपने बन्दों) को देख रहा है

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيَّ ۚ نَ بَغَيْرِ حَقٍّ ۚ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ
بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

बेशक जो लोग खुदा की आयतों से इन्कार करते हैं और नाहक़ पैग़म्बरों को क़त्ल करते हैं और उन लोगों को (भी) क़त्ल करते हैं जो (उन्हें) इन्साफ़ करने का हुक्म करते हैं तो (ऐ रसूल) तुम उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दो

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَلُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ

यही वह (बदनसीब) लोग हैं जिनका सारा किया कराया दुनिया और आख़िरत (दोनों) में अकारत गया और कोई उनका मददगार नहीं

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا ۚ نَصِيبًا ۚ مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ ۚ مِنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ

(ऐ रसूल) क्या तुमने (उलमाए यहूद) के हाल पर नज़र नहीं की जिनको किताब (तौरत) का एक हिस्सा दिया गया था (अब) उनको किताबे खुदा की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि वही (किताब) उनके झगड़ों का फैसला कर दे इस पर भी उनमें का एक गिरोह मुंह फेर लेता है और यही लोग रूगरदानी (मुँह फेरने) करने वाले हैं

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا ۚ لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا ۚ مَّعْدُودَتٍ ۚ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا ۚ يَفْتَرُونَ

ये इस वजह से है कि वह लोग कहते हैं कि हमें गिनती के चन्द दिनों के सिवा जहन्नुम की आग हरगिज़ छुएगी भी तो नहीं जो इफ़तेरा परदाज़ी ये लोग बराबर करते आए हैं उसी ने उन्हें उनके दीन में भी धोखा दिया है

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ ۚ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ ۚ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

फ़िर उनकी क्या गत होगी जब हम उनको एक दिन (क़यामत) जिसके आने में कोई शुबहा नहीं इक्ट्ठा करेंगे और हर शख्स को उसके किए का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उनकी किसी तरह हक़तल्फ़ी नहीं की जाएगी

قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۚ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ ۚ قَدِيرٌ ۚ

(ऐ रसूल) तुम तो यह दुआ माँगों कि ऐ खुदा तमाम आलम के मालिक तू ही जिसको चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू ही जिसको चाहे इज्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ में है बेशक तू ही हर चीज़ पर कादिर है

تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَمِيتِ وَتُخْرِجُ الْمَمِيتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

तू ही रात को (बढ़ा के) दिन में दाखिल कर देता है (तो) रात बढ़ जाती है और तू ही दिन को (बढ़ा के) रात में दाखिल करता है (तो दिन बढ़ जाता है) तू ही बेजान (अन्डा नुत्फ़ा वगैरह) से जानदार को पैदा करता है और तू ही जानदार से बेजान नुत्फ़ा (वगैरहा) निकालता है और तू ही जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاتُوا ۚ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۚ وَاللَّهُ إِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ

मोमिनीन मोमिनीन को छोड़ के काफ़िरों को अपना सरपरस्त न बनाएँ और जो ऐसा करेगा तो उससे खुदा से कुछ सरोकार नहीं मगर (इस क्रिस्म की तदबीरों से) किसी तरह उन (के शर) से बचना चाहो तो (ख़ैर) और खुदा तुमको अपने ही से डराता है और खुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है

قُلْ إِنْ تَخَفُوا ۖ مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمُهُ اللَّهُ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

ऐ रसूल तुम उन (लोगों से) कह दो किजो कुछ तुम्हारे दिलों में है तो ख्वाह उसे छिपाओ या ज़ाहिर करो (बहरहाल) खुदा तो उसे जानता है और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में वह (सब कुछ) जानता है और खुदा हर चीज़ पर कादिर है

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ ۚ مُحْضَرَةً ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا ۚ أَوْ بَعِيدًا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَالٍ ۚ

(और उस दिन को याद रखो) जिस दिन हर शख्स जो कुछ उसने (दुनिया में) नेकी की है और जो कुछ बुराई की है उसको मौजूद पाएगा (और) आरज़ू करेगा कि काश उस की बदी और उसके दरमियान में ज़माना दराज़ (हाएल) हो जाता और खुदा तुमको अपने ही से डराता है और खुदा अपने बन्दों पर बड़ा शफ़ीक़ और (मेहरबान भी) है

31

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

(ऐ रसूल) उन लोगों से कह दो कि अगर तुम खुदा को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो कि खुदा (भी) तुमको दोस्त रखेगा और तुमको तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

32

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ

(ऐ रसूल) कह दो कि खुदा और रसूल की फ़रमाबरदारी करो फिर अगर यह लोग उससे सरताबी करें तो (समझ लें कि) खुदा काफ़िरों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता

33

۝ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا ۖ وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ

बेशक खुदा ने आदम और नूह और खानदाने इबराहीम और खानदाने इमरान को सारे जहान से बरगुज़ीदा किया है

34

ذُرِّيَّةَ ۖ بَعْضُهَا مِنْ ۖ بَعْضٍ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

बाज़ की औलाद को बाज़ से और खुदा (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है

35

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا ۖ فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

(ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब इमरान की बीवी ने (खुदा से) अर्ज़ की कि ऐ मेरे पालने वाले मेरे पेट में जो बच्चा है (उसको मैं दुनिया के काम से) आज़ाद करके तेरी नज़्ज़ करती हूँ तू मेरी तरफ़ से (ये नज़्ज़ कुबूल फ़रमा तू बेशक बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ وَلَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْأُنْثَىٰ ۚ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

फिर जब वह बेटी जन चुकी तो (हैरत से) कहने लगी ऐ मेरे परवरदिगार (मैं क्या करूँ) मैं तो ये लड़की जनी हूँ और लड़का लड़की के ऐसा (गया गुज़रा) नहीं होता हालाँकि उसे कहने की ज़रूरत क्या थी जो वे जनी थी खुदा उस (की शान व मरतबा) से खूब वाकिफ़ था और मैंने उसका नाम मरियम रखा है और मैं उसको और उसकी औलाद को शैतान मरदूद (के फ़रेब) से तेरी पनाह में देती हूँ

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ ۙ وَأَنبَأَتْهَا نَبَأًا حَسَنًا ۙ وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۙ كُلَّمَا دَخَلَ
عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۙ قَالَ يَمْرَأُ أُنْثَىٰ لَكَ هَذَا ۙ قَالَتْ هُوَ
مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۙ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

तो उसके परवरदिगार ने (उनकी नज़्म) मरियम को खुशी से कुबूल फ़रमाया और उसकी नशो व नुमा (परवरिश) अच्छी तरह की और ज़करिया को उनका कफ़ील बनाया जब किसी वक्त ज़करिया उनके पास (उनके) इबादत के हुजरे में जाते तो मरियम के पास कुछ न कुछ खाने को मौजूद पाते तो पूँछते कि ऐ मरियम ये (खाना) तुम्हारे पास कहाँ से आया है तो मरियम ये कह देती थी कि यह खुदा के यहाँ से (आया) है बेशक खुदा जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۙ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۙ إِنَّكَ سَمِيعُ
الدُّعَاءِ

(ये माजरा देखते ही) उसी वक्त ज़करिया ने अपने परवरदिगार से दुआ कि और अर्ज की ऐ मेरे पालने वाले तू मुझको (भी) अपनी बारगाह से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा बेशक तू ही दुआ का सुनने वाला है

فَنَادَتْهُ الْمَلِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا
بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا ۙ وَحَصُورًا ۙ وَنَبِيًّا ۙ مِّنَ الصَّالِحِينَ

अभी ज़करिया हुजरे में खड़े (ये) दुआ कर ही रहे थे कि फ़रिश्तों ने उनको आवाज़ दी कि खुदा तुमको यहया (के पैदा होने) की खुशखबरी देता है जो जो कलेमतुल्लाह (ईसा) की तस्दीक करेगा और (लोगों का) सरदार होगा और औरतों की तरफ़ रसाबत न करेगा और नेको कार नबी होगा

قَالَ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ ۖ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ ۝ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ

जकरिया ने अर्ज की परवरदिगार मुझे लड़का क्योंकर हो सकता है हालाँकि मेरा बुढ़ापा आ पहुंचा और (उसपर) मेरी बीवी बॉझ है (खुदा ने) फ़रमाया इसी तरह खुदा जो चाहता है करता है

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً ۖ ۝ قَالَ ءَايَتُكَ أَلاَّ تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۖ ۝ ۱
وَأَذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا ۖ ۱ وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَرِ

जकरिया ने अर्ज की परवरदिगार मेरे इत्मेनान के लिए कोई निशानी मुकरर फ़रमा इरशाद हुआ तुम्हारी निशानी ये है तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और (उसके शुक्रिये में) अपने परवरदिगार की अक्सर याद करो और रात को और सुबह तड़के (हमारी) तसबीह किया करो

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَكَةُ يَمْرُؤُا إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَأَصْطَفَاكِ عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ

और वह वाकिया भी याद करो जब फ़रिश्तों ने मरियम से कहा, ऐ मरियम तुमको खुदा ने बरगुज़ीदा किया और (तमाम) गुनाहों और बुराइयों से पाक साफ़ रखा और सारे दुनिया जहाँ की औरतों में से तुमको मुन्तख़िब किया है

يَمْرُؤُا أَقْنَتِي لِرَبِّكِ وَأَسْجُدِي وَأَرْكَعِي مَعَ الرُّكَّعِينَ

(तो) ऐ मरियम इसके शुक्र से मैं अपने परवरदिगार की फ़रमाबदारी करूँ सजदा और रूकूउ करने वालों के साथ रूकूउ करती रहूँ

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَقُولُ أَقْلَمَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ
مَرْيَمَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ

(ऐ रसूल) ये ख़बर ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए से भेजते हैं (ऐ रसूल) तुम तो उन सरपरस्ताने मरियम के पास मौजूद न थे जब वह लोग अपना अपना क़लम दरिया में बतौर कुरआ के डाल रहे थे (देखें) कौन मरियम का कफ़ील बनता है और न तुम उस वक्त उनके पास मौजूद थे जब वह लोग आपस में झगड़ रहे थे

إِذْ قَالَتِ الْمَلَكَةُ يَمْرِيْمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِكَلِمَةٍ ۖ مِنْهُ أَسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ

(वह वाक़िया भी याद करो) जब फ़रिश्तों ने (मरियम) से कहा ऐ मरियम खुदा तुमको सिर्फ़ अपने हुक्म से एक लड़के के पैदा होने की खुशख़बरी देता है जिसका नाम ईसा मसीह इब्ने मरियम होगा (और) दुनिया और आख़ेरत (दोनों) में बाइज्जत (आबरू) और खुदा के मुकर्रब बन्दों में होगा

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَمِنَ الصّٰلِحِينَ

और (बचपन में) जब झूले में पड़ा होगा और बड़ी उम्र का होकर (दोनों हालतों में यकसॉ) लोगों से बातें करेगा और नेको कारों में से होगा

قَالَتْ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي وَلَدٌ ۖ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا ۖ فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ ۖ كُنْ فَيَكُونُ

(ये सुनकर मरियम ताज्जुब से) कहने लगी परवरदिगार मुझे लड़का क्योंकर होगा हालाँकि मुझे किसी मर्द ने छुआ तक नहीं इरशाद हुआ इसी तरह खुदा जो चाहता है करता है जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस कह देता है 'हो जा' तो वह हो जाता है

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ

और (ऐ मरियम) खुदा उसको (तमाम) किताबे आसमानी और अक्ल की बातें और (खासकर) तौरत व इन्जील सिखा देगा

وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ ۖ مِّن رَّبِّكُمْ ۚ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنْفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا ۚ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۚ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ

और बनी इसराइल का रसूल (करार देगा और वह उनसे यूँ कहेगा कि) मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (अपनी नबूवत की) यह निशानी लेकर आया हूँ कि मैं गुंथी हुई मिट्टी से एक परिन्दे की सूरत बनाऊँगा फिर उस पर (कुछ) दम करूँगा तो वो खुदा के हुक्म से उड़ने लगेगा और मैं खुदा ही के हुक्म से मादरज़ाद (पैदायशी) अंधे और कोढ़ी को अच्छा करूँगा और मूर्खों को ज़िन्दा करूँगा और जो कुछ तुम खाते हो और अपने घरों में जमा करते हो मैं (सब) तुमको बता दूँगा अगर तुम ईमानदार हो तो बेशक तुम्हारे लिये इन बातों में (मेरी नबूवत की) बड़ी निशानी है

وَمُصَدِّقًا ۚ لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَلَأُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ۚ وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ ۚ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

और तौरित जो मेरे सामने मौजूद है मैं उसकी तसदीक़ करता हूँ और (मेरे आने की) एक ग़रज़ यह (भी) है कि जो चीज़े तुम पर हराम है उनमें से बाज़ को (हुक्मे खुदा से) हलाल कर दूँ और मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (अपनी नबूवत की) निशानी लेकर तुम्हारे पास आया हूँ

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ ۚ مُّسْتَقِيمٌ

पस तुम खुदा से डरो और मेरी इताअत करो बेशक खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है

ۚ فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۚ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ

पस उसकी इबादत करो (क्योंकि) यही नज़ात का सीधा रास्ता है फिर जब ईसा ने (इतनी बातों के बाद भी) उनका कुफ़्र (पर अड़े रहना) देखा तो (आखिर) कहने लगे कौन ऐसा है जो खुदा की तरफ़ होकर मेरा मददगार बने (ये सुनकर) हवारीयों ने कहा हम खुदा के तरफ़दार हैं और हम खुदा पर ईमान लाए

رَبَّنَا ءَامِنَّا بِمَا أُنزِلَتْ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ

और (ईसा से कहा) आप गवाह रहिए कि हम फ़रमाबरदार हैं

وَمَكْرُوا؟ وَمَكَرَ اللَّهُ؟ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرِينَ

और खुदा की बारगाह में अर्ज़ की कि ऐ हमारे पालने वाले जो कुछ तूने नाज़िल किया हम उसपर ईमान लाए और हमने तेरे रसूल (ईसा) की पैरवी इस्तेयार की पस तू हमें (अपने रसूल के) गवाहों के दफ़्तर में लिख ले

إِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ نَفِثَ الْشَّيْطَانُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ قَوْلَهُ الْكَلِمَةَ الْكَلِيمَةَ ۚ وَالَّذِينَ أَتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

और यहूदियों (ने ईसा से) मक्कारी की और खुदा ने उसके दफ़ईया की तदबीर की और खुदा सब से बेहतर तदबीर करने वाला है (वह वक्त भी याद करो) जब ईसा से खुदा ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं ज़रूर तुम्हारी ज़िन्दगी की मुद्दत पूरी करके तुमको अपनी तरफ़ उठा लूंगा और काफ़ि़रों (की ज़िन्दगी) से तुमको पाक व पाकीज़ा रखूंगा और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की उनको क़यामत तक काफ़ि़रों पर ग़ालिब रखूंगा फिर तुम सबको मेरी तरफ़ लौटकर आना है

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَآَعَذْبُهُمْ عَذَابًا ۖ شَدِيدًا ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآَخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِينَ

तब (उस दिन) जिन बातों में तुम (दुनिया) में झगड़े करते थे (उनका) तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दूंगा पस जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया उनपर दुनिया और आख़िरत (दोनों में) सख्त अज़ाब करूंगा और उनका कोई मददगार न होगा

وَأَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए तो खुदा उनको उनका पूरा अज़्र व सवाब देगा और खुदा ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता

ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ

(ऐ रसूल) ये जो हम तुम्हारे सामने बयान कर रहे हैं कुदरते खुदा की निशानियाँ और हिकमत से भरे हुये तज़क़िरे हैं

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ ۖ مِنْ تُرَابٍ ۖ ثُمَّ قَالَ لَهُ ۖ كُنْ فَيَكُونُ

खुदा के नज़दीक तो जैसे ईसा की हालत वैसी ही आदम की हालत कि उनको को मिट्टी का पुतला बनाकर कहा कि 'हो जा' पस (फ़ौरन ही) वह (इन्सान) हो गया

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنَ مِنَ الْمُمْتَرِينَ

(ऐ रसूल ये है) हक़ बात (जो) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (बताई जाती है) तो तुम शक करने वालों में से न हो जाना

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ ۖ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا ۖ نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ
وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ

फिर जब तुम्हारे पास इल्म (कुरान) आ चुका उसके बाद भी अगर तुम से कोई (नसरानी) ईसा के बारे में हुज्जत करें तो कहो कि (अच्छा मैदान में) आओ हम अपने बेटों को बुलाएं तुम अपने बेटों को और हम अपनी औरतों को (बुलाएं) और तुम अपनी औरतों को और हम अपनी जानों को बुलाएं ओर तुम अपनी जानों को

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۖ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

उसके बाद हम सब मिलकर (खुदा की बारगाह में) गिड़गिड़ाएं और झूठों पर खुदा की लानत करें (ऐ रसूल) ये सब यक़ीनी सच्चे वाक़यात हैं और खुदा के सिवा कोई माबूद (क्राबिले परसतिश) नहीं है

فَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ

और बेशक खुदा ही सब पर ग़ालिब और हिकमत वाला है

قُلْ يَٰ أَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ تَعَالَوْا۟ ۚ إِلَىٰ كَلِمَةٍ ۖ سَوَآءٍ ۖ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا
نُشْرِكَ بِهِۦ ۖ شَيْءٌ ۚ ۙ وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا ۚ ۙ مِّنْ دُونِ ٱللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا۟ ۚ
فَقُولُوا۟ ۚ أَشْهَدُوا۟ ۚ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ

फिर अगर इससे भी मुंह फेरें तो (कुछ) परवाह (नहीं) खुदा फ़सादी लोगों को खूब जानता है (ऐ रसूल) तुम (उनसे) कहो कि ऐ
अहले किताब तुम ऐसी (ठिकाने की) बात पर तो आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यकसों है कि खुदा के सिवा किसी की
इबादत न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न बनाएं और खुदा के सिवा हममें से कोई किसी को अपना परवरदिगार न
बनाए अगर इससे भी मुंह मोड़ें तो तुम गवाह रहना हम (खुदा के) फ़रमाबरदार हैं

يَٰ أَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تُحَآجُّونَ فِىٓ إِبْرَٰهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ ٱلتَّوْرَةُ وَٱلْإِنجِيلُ إِلَّا مِنۢ بَعْدِهِۦ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

ऐ अहले किताब तुम इबराहीम के बारे में (स्वाह मा स्वाह) क्यों झगड़ते हो कि कोई उनको नसरानी कहता है कोई यहूदी
हालाँकि तौरैत व इन्जील (जिनसे यहूद व नसारा की इब्तेदा है वह) तो उनके बाद ही नाज़िल हुई

هَٰأَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ حُجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِۦ ۖ عِلْمٌ ۖ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِۦ ۖ
عِلْمٌ ۚ ۙ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते ? (ऐ लो अरे) तुम वही एहमक़ लोग हो कि जिस का तुम्हें कुछ इल्म था उसमें तो झगड़ा
कर चुके (खैर) फिर तब उसमें क्या (स्वाह मा स्वाह) झगड़ने बैठे हो जिसकी (सिरे से) तुम्हें कुछ खबर नहीं और (हक़क़ते हाल
तो) खुदा जानता है और तुम नहीं जानते

مَا كَانَ إِبْرَٰهِيمَ يَهُودِيًّا ۖ وَلَا نَصْرَانِيًّا ۖ وَلَكِن كَانَ حَنِيفًا ۖ مُّسْلِمًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ
ٱلْمُشْرِكِينَ

इबराहीम न तो यहूदी थे और न नसरानी बल्कि निरे खरे हक़ पर थे (और) फ़रमाबरदार (बन्दे) थे और मुशरिकों से भी न थे

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ

इबराहीम से ज्यादा खुसूसियत तो उन लोगों को थी जो खास उनकी पैरवी करते थे और उस पैगम्बर और ईमानदारों को (भी) है और मोमिनीन का खुदा मालिक है

وَدَّتْ طَّائِفَةٌ ۙ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ

(मुसलमानो) अहले किताब से एक गिरोह ने बहुत चाहा कि किसी तरह तुमको राहेरास्त से भटका दे हालाँकि वह (अपनी तदबीरों से तुमको तो नहीं मगर) अपने ही को भटकाते हैं

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ

और उसको समझते (भी) नहीं ऐ अहले किताब तुम खुदा की आयतों से क्यों इन्कार करते हो, हालाँकि तुम खुद गवाह बन सकते हो

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

ऐ अहले किताब तुम क्यों हक व बातिल को गड़बड़ करते और हक को छुपाते हो हालाँकि तुम जानते हो

وَقَالَتْ طَّائِفَةٌ ۙ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ ءَامِنُوا ۙ بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ ءَامَنُوا ۙ وَجْهَ النَّهَارِ وَآكُفُّوا ۙ ءَاخِرَهُ ۙ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

और अहले किताब से एक गिरोह ने (अपने लोगों से) कहा कि मुसलमानों पर जो किताब नाज़िल हुई है उसपर सुबह सवेरे ईमान लाओ और आखिर वक्त लट्कार कर दिया करो शायद मुसलमान (इसी तदबीर से अपने दीन से) फिर जाए

وَلَا تُؤْمِنُوا ۚ إِلَّا لِمَنْ تَبَعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدٌ ۚ مِثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۚ

और तुम्हारे दीन की पैरवरी करे उसके सिवा किसी दूसरे की बात का ऐतबार न करो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि बस खुदा ही की हिदायत तो हिदायत है (यहूदी बाहम ये भी कहते हैं कि) उसको भी न (मानना) कि जैसा (उम्दा दीन) तुमको दिया गया है, वैसा किसी और को दिया जाय या तुमसे कोई शख्स खुदा के यहाँ झगड़ा करे (ऐ रसूल तुम उनसे) कह दो कि (ये क्या ग़लत ख्याल है) फ़ज़ल (व करम) खुदा के हाथ में है वह जिसको चाहे दे और खुदा बड़ी गुन्जाईश वाला है (और हर शै को) े जानता है

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

जिसको चाहे अपनी रहमत के लिये खास कर लेता है और खुदा बड़ा फ़ज़लों करम वाला है

ۚ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنُهُ بِقِنطَارٍ ۚ يُؤَدِّهِ ۚ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمَنُهُ بدينارٍ ۚ لَا يُؤَدِّهِ ۚ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ۚ اذْكَرَ بَأَنَّهُمْ قَالُوا ۚ لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّ ۚ نَ سَبِيلٌ ۚ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

और अहले किताब कुछ ऐसे भी हैं कि अगर उनके पास रूपए की ढेर अमानत रख दो तो भी उसे (जब चाहो) वैसे ही तुम्हारे हवाले कर देंगे और बाज़ ऐसे हैं कि अगर एक अशफ़ी भी अमानत रखो तो जब तक तुम बराबर (उनके सर) पर खड़े न रहोगे तुम्हें वापस न देंगे ये (बदमुआम लगी) इस वजह से है कि उन का तो ये क़ौल है कि (अरब के) जाहिलो (का हक़ मार लेने) में हम पर कोई इल्ज़ाम की राह ही नहीं और जान बूझ कर खुदा पर झूठ (तूफ़ान) जोड़ते हैं

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ ۚ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ

हाँ (अलबत्ता) जो शख्स अपने एहद को पूरा करे और परहेज़गारी इस्तेयार करे तो बेशक खुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أَوْ لَئِكَ لَا خَلْقَ لَهُمْ فِي آخِرَةِ
وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

बेशक जो लोग अपने एहद और (क़समे) जो खुदा (से किया था उसके) बदले थोड़ा (दुनियावी) मुआवेज़ा ले लेते हैं उन ही लोगों के वास्ते आखिरत में कुछ हिस्सा नहीं और क़यामत के दिन खुदा उनसे बात तक तो करेगा नहीं ओर उनकी तरफ़ नज़र (रहमत) ही करेगा और न उनको (गुनाहों की गन्दगी से) पाक करेगा और उनके लिये दर्दनाम अज़ाब है

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلُؤْنَ ۝ أَنْ أَلْسِنَتُهُمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ
الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ
وَهُمْ يَعْلَمُونَ

और अहले किताब से बाज़ ऐसे ज़रूर हैं कि किताब (तौरत) में अपनी ज़बाने मरोड़ मरोड़ के (कुछ का कुछ) पढ़ जाते हैं ताकि तुम ये समझो कि ये किताब का जुज़ है हालाँकि वह किताब का जुज़ नहीं और कहते हैं कि ये (जो हम पढ़ते हैं) खुदा के यहाँ से (उतरा) है हालाँकि वह खुदा के यहाँ से नहीं (उतरा) और जानबूझ कर खुदा पर झूठ (तूफ़ान) जोड़ते हैं

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا ۝
عِبَادًا ۝ أَلَمْ يَكُنْ كُونُوا ۝ رَبَّنَا ۝ نَبَا ۝ كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا
كُنْتُمْ تُدْرُسُونَ

किसी आदमी को ये ज़ेबा न था कि खुदा तो उसे (अपनी) किताब और हिकमत और नबूवत अता फ़रमाए और वह लोगों से कहता फ़िरे कि खुदा को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ क्योंकि तुम तो (हमेशा) किताबे खुदा (दूसरो) को पढ़ाते रहते हो और तुम खुद भी सदा पढ़ते रहे हो

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا ۝ الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّ ۝ أَنْ أَرْبَابًا ۝ أَلَا يَأْمُرُكُمْ بِالْكَفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ
مُسْلِمُونَ

और वह तुमसे ये तो (कभी) न कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को खुदा बना लो भला (कहीं ऐसा हो सकता है कि) तुम्हारे मुसलमान हो जाने के बाद तुम्हें कुफ़्र का हुक्म करेगा

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّ ۖ لَمَّا آتَيْنَاكُمْ مِّنْ كِتَابٍ ۖ وَحِكْمَةٍ ۖ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ ۖ مُّصَدِّقٌ ۖ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ ۖ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ۖ ۖ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا ۖ أَقْرَرْنَا ۖ قَالَ فَاشْهَدُوا ۖ وَأَنَا ۖ مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۖ

(और ऐ रसूल वह वक्त भी याद दिलाओ) जब खुदा ने पैग़म्बरों से इकरार लिया कि हम तुमको जो कुछ किताब और हिकमत (वगैरह) दे उसके बाद तुम्हारे पास कोई रसूल आए और जो किताब तुम्हारे पास उसकी तसदीक करे तो (देखो) तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना, और ज़रूर उसकी मदद करना (और) खुदा ने फ़रमाया क्या तुमने इकरार लिया तुमने मेरे (एहद का) बोझ उठा लिया सबने अर्ज़ की हमने इकरार किया इरशाद हुआ (अच्छा) तो आज के क़ौल व (करार के) आपस में एक दूसरे के गवाह रहना

فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْفَٰسِقُونَ ۖ

और तुम्हारे साथ मैं भी एक गवाह हूँ फिर उसके बाद जो शख्स (अपने क़ौल से) मुंह फेरे तो वही लोग बदचलन हैं

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ ۖ أَسْلَمَ مَن فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا ۖ وَكَرْهًا ۖ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۖ

तो क्या ये लोग खुदा के दीन के सिवा (कोई और दीन) ढूँढते हैं हालाँकि जो (फ़रिश्ते) आसमानों में हैं और जो (लोग) ज़मीन में हैं सबने खुशी खुशी या ज़बरदस्ती उसके सामने अपनी गर्दन डाल दी है और (आखिर सब) उसकी तरफ़ लौट कर जाएंगे

قُلْ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰٓ إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ ۖ مُسْلِمُونَ ۖ

(ऐ रसूल उन लोगों से) कह दो कि हम तो खुदा पर ईमान लाए और जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो (सहीफ़े) इबराहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याकूब और औलादे याकूब पर नाज़िल हुये और मूसा और ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को जो (जो किताब) उनके परवरदिगार की तरफ़ से इनायत हुई (सब पर ईमान लाए) हम तो उनमें से किसी एक में भी फ़र्क़ नहीं करते

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا ۖ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي آلِ آخِرَةِ مِنَ الْخُسْرَيْنِ

और हम तो उसी (यकता खुदा) के फ़रमाबरदार हैं और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन की ख्वाहिश करे तो उसका वह दीन हरगिज़ कुबूल ही न किया जाएगा और वह आखिरत में सख्त घाटे में रहेगा

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا ۖ كَفَرُوا ۚ بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا ۚ أَنَّ الرُّسُولَ حَقٌّ ۖ وَجَاءَهُمُ
الْبَيِّنَاتُ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

भला खुदा ऐसे लोगों की क्योंकर हिदायत करेगा जो इमाने लाने के बाद फिर काफ़िर हो गए हालाँकि वह इक्कार कर चुके थे कि पैग़म्बर (आखिरूज़ज़मा) बरहक़ हैं और उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े भी आ चुके थे और खुदा ऐसी हठधर्मी करने वाले लोगों की हिदायत नहीं करता

أَوَلَيْكَ جَزَاؤُهُمْ أَنْ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ

ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उनपर खुदा और फ़रिश्तों और (दुनिया जहाँन के) सब लोगों की फिटकार हैं

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ

और वह हमेशा उसी फिटकार में रहेंगे न तो उनके अज़ाब ही में तख़्कीफ़ की जाएगी और न उनको मोहलत दी जाएगी

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا ۖ مِنْ ۚ بَعْدَ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ

मगर (हाँ) जिन लोगों ने इसके बाद तौबा कर ली और अपनी (खराबी की) इस्लाह कर ली तो अलबत्ता खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا ۖ كُفْرًا ۚ لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الضَّالُّونَ

जो अपने ईमान के बाद काफ़िर हो बैठे फिर (रोज़ बरोज़ अपना) कुफ़्र बढ़ाते चले गये तो उनकी तौबा हरगिज़ न कुबूल की जाएगी और यही लोग (पल्ले दरजे के) गुमराह हैं

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَمَاتُوا ۖ وَهُمْ كُفَّارٌ ۖ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا ۖ
وَلَوْ أَفْتَدَىٰ بِهِ ۖ ۚ أَوْ لَكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तिथार किया और कुफ़्र की हालत में मर गये तो अगरचे इतना सोना भी किसी की गुलू खलासी (छुटकारा पाने) में दिया जाए कि ज़मीन भर जाए तो भी हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा और उनका कोई मददगार भी न होगा

لَنْ تَنَالُوا ۖ الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنْفِقُوا ۖ مِمَّا تُحِبُّونَ ۖ وَمَا تُنْفِقُوا ۖ مِنْ شَيْءٍ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ ۖ
عَلِيمٌ ۖ

(लोगों) जब तक तुम अपनी पसन्दीदा चीज़ों में से कुछ राहे खुदा में खर्च न करोगे हरगिज़ नेकी के दरजे पर फ़ायज़ नहीं हो सकते और तुम कोई

ۖ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِطًّا ۖ لِابْنِ إِسْرَءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَءِيلُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ مِنْ قَبْلِ
أَنْ تُنْزَلَ التَّوْرَةُ ۖ قُلْ فَأْتُوا ۖ بِالتَّوْرَةِ فَاتْلُوهَا ۖ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

सी चीज़ भी खर्च करो खुदा तो उसको ज़रूर जानता है तौरैत के नाज़िल होने के क़बल याकूब ने जो जो चीज़े अपने ऊपर हराम कर ली थीं उनके सिवा बनी इसराइल के लिए सब खाने हलाल थे (ऐ रसूल उन यहूद से) कह दो कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो तौरैत ले आओ

فَمَنْ أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ ۖ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

और उसको (हमारे सामने) पढ़ो फिर उसके बाद भी जो कोई खुदा पर झूठ तूफ़ान जोड़े तो (समझ लो) कि यही लोग ज़ालिम (हठधर्म) हैं

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۖ فَاتَّبِعُوا ۖ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(ऐ रसूल) कह दो कि खुदा ने सच फ़रमाया तो अब तुम मिल्लते इबराहीम (इस्लाम) की पैरवी करो जो बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन से न थे

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ ۚ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا ۖ وَهُدًى ۚ لِّلْعَالَمِينَ

लोगों (की इबादत) के वास्ते जो घर सबसे पहले बनाया गया वह तो यकीनन यही (काबा) है जो मक्के में है बड़ी (खैर व बरकत) वाला और सारे जहाँ के लोगों का रहनुमा

فِيهِ ءَايَاتٌ ۚ بَيِّنَاتٌ ۚ مَّقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهُ ۚ كَانَ ءَامِنًا ۚ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ

इसमें (हुरमत की) बहुत सी वाज़े और रौशन निशानियाँ हैं (उनमें से) मुक़ाम इबराहीम है (जहाँ आपके कदमों का पत्थर पर निशान है) और जो इस घर में दाखिल हुआ अमन में आ गया और लोगों पर वाज़िब है कि महज़ खुदा के लिए खानाए काबा का हज़ करें जिन्हे वहाँ तक पहुँचने की इस्तेताअत है और जिसने बावजूद कुदरत हज़ से इन्कार किया तो (याद रखे) कि खुदा सारे जहाँ से बेपरवा है

قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ अहले किताब खुदा की आयतो से क्यो मुन्किर हुए जाते हो हालाँकि जो काम काज तुम करते हो खुदा को उसकी (पूरी) पूरी इत्तिला है

قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ ءَامَنَ تَبَغُّونَهَا عِوَجًا ۚ وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ अहले किताब दीदए दानिस्ता खुदा की (सीधी) राह में (नाहक की) कज़ी ढूँढो (ढूँढ) के ईमान लाने वालों को उससे क्यो रोक्ते हो ओर जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे बेखबर नहीं है

يَٰأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنْ تُطِيعُوا ۚ فَرِيقًا ۚ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفَرِينَ

ऐ ईमान वालों अगर तुमने अहले किताब के किसी फ़िरके का भी कहना माना तो (याद रखो कि) वह तुमको ईमान लाने के बाद (भी) फिर दुबारा काफ़िर बना छोड़ेंगे

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ آيَاتُ اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۚ وَمَنْ يَعْتَصِم بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ

और (भला) तुम क्योंकर काफ़िर बन जाओगे हालाँकि तुम्हारे सामने खुदा की आयतें (बराबर) पढ़ी जाती हैं और उसके रसूल (मोहम्मद) भी तुममें (मौजूद) हैं और जो शख्स खुदा से वाबस्ता हो वह (तो) जरूर सीधी राह पर लगा दिया गया

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا ۚ اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ ۚ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ

ऐ ईमान वालों खुदा से डरो जितना उससे डरने का हक है और तुम (दीन) इस्लाम के सिवा किसी और दीन पर हरगिज़ न मरना

وَأَعْتَصِمُوا ۚ بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا ۚ وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ ۚ وَأَذْكُرُوا ۚ نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً ۚ فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ ۚ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ ۚ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ ءَايَتِهِ ۚ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

और तुम सब के सब (मिलकर) खुदा की रस्सी मज़बूती से थामे रहो और आपस में (एक दूसरे) के फूट न डालो और अपने हाल (ज़ार) पर खुदा के एहसान को तो याद करो जब तुम आपस में (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो खुदा ने तुम्हारे दिलों में (एक दूसरे की) उलफ़त पैदा कर दी तो तुम उसके फ़ज़ल से आपस में भाई भाई हो गए और तुम गोया सुलगती हुई आग की भट्टी (दोज़ख) के लब पर (खड़े) थे गिरना ही चाहते थे कि खुदा ने तुमको उससे बचा लिया तो खुदा अपने एहकाम यूँ वाजे करके बयान करता है ताकि तुम राहे रास्त पर आ जाओ

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ ۚ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

और तुमसे एक गिरोह ऐसे (लोगों का भी) तो होना चाहिये जो (लोगों को) नेकी की तरफ बुलाए अच्छे काम का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और ऐसे ही लोग (आखेरत में) अपनी दिली मुरादे पायेंगे

وَلَا تَكُونُوا ۚ كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا ۚ وَآخْتَلَفُوا ۚ مِنْ ۚ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُو۟لَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ

और तुम (कहीं) उन लोगों के ऐसे न हो जाना जो आपस में फूट डाल कर बैठ रहे और रौशन (दलील) आने के बाद भी एक मुंह एक ज़बान न रहे और ऐसे ही लोगों के वास्ते बड़ा (भारी) अज़ाब है

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ ۚ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ أُسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا ۚ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ

(उस दिन से डरो) जिस दिन कुछ लोगों के चेहरे तो सफ़ेद नूरानी होंगे और कुछ (लोगों) के चेहरे सियाह जिन लोगों के मुहँ में कालिक होगी (उनसे कहा जायेगा) हाए क्यों तुम तो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए थे अच्छा तो (लो) (अब) अपने कुफ़्र की सज़ा में अज़ाब (के मजे) चखो

وَأَمَّا الَّذِينَ أَبْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

और जिनके चेहरे पर नूर बरसता होगा वह तो खुदा की रहमत(बहिश्त) में होंगे (और) उसी में सदा रहेंगे

تِلْكَ ءَايَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا ۚ لِّلْعَالَمِينَ

(ऐ रसूल) ये खुदा की आयतें हैं जो हम तुमको ठीक (ठीक) पढ़ के सुनाते हैं और खुदा सारे जहाँ के लोगों (से किसी) पर जुल्म करना नहीं चाहता

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (सब) खुदा ही का है और (आखिर) सब कामों की रूज़ु खुदा ही की तरफ़ है

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ ۚ وَلَوْ ءَامَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا ۚ لَهُمْ ۚ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ
الْفَاسِقُونَ

तुम क्या अच्छे गिरोह हो कि (लोगों की) हिदायत के वास्ते पैदा किये गए हो तुम (लोगों को) अच्छे काम का हुक्म करते हो और बुरे कामों से रोकते हो और खुदा पर ईमान रखते हो और अगर अहले किताब भी (इसी तरह) ईमान लाते तो उनके हक में बहुत अच्छा होता उनमें से कुछ ही तो ईमानदार हैं और अक्सर बदकार

لَنْ يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى ۚ وَإِنْ يُقْتُلُوكُمْ يُؤْلُوكُمْ ۚ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ

(मुसलमानों) ये लोग मामूली अज़ीयत के सिवा तुम्हें हरगिज़ ज़रर नहीं पहुंचा सकते और अगर तुमसे लड़ेंगे तो उन्हें तुम्हारी तरफ़ पीठ ही करनी होगी और फिर उनकी कहीं से मदद भी नहीं पहुंचेगी

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذَّلِيلَةُ ۚ أَيْنَ مَا تُقْفُوا ۚ إِلَّا بِحَبْلٍ ۚ مِنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ ۚ مِنَ النَّاسِ وَبَآءُ
بِغَضَبٍ ۚ مِنَ اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا ۚ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ ۚ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا ۚ وَكَانُوا ۚ يَعْتَدُونَ

और जहाँ कहीं हत्ते चढ़े उनपर रूसवाई की मार पड़ी मगर खुदा के एहद (या) और लोगों के एहद के ज़रिये से (उनको कहीं पनाह मिल गयी) और फिर हेरफेर के खुदा के गज़ब में पड़ गए और उनपर मोहताजी की मार (अलग) पड़ी ये (क्यों) इस सबब से कि वह खुदा की आयतों से इन्कार करते थे और पैग़म्बरों को नाहक क़त्ल करते थे ये सज़ा उसकी है कि उन्होंने नाफ़रमानी की और हद से गुज़र गए थे

ۚ لَيْسُوا ۚ سَوَاءً ۚ ۚ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ ۚ قَائِمَةٌ ۚ يَتْلُونَ ۚ آيَاتِ اللَّهِ ۚ ءَانَاءَ اللَّيْلِ
وَهُمْ يَسْجُدُونَ

और ये लोग भी सबके सब यकसों नहीं हैं (बल्कि) अहले किताब से कुछ लोग तो ऐसे हैं कि (खुदा के दीन पर) इस तरह साबित क़दम हैं कि रातों को खुदा की आयतें पढ़ा करते हैं और वह बराबर सजदे किया करते हैं

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسْرِعُونَ
فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ

खुदा और रोज़े आखेरत पर ईमान रखते हैं और अच्छे काम का तो हुक्म करते हैं और बुरे कामों से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ पड़ते हैं और यही लोग तो नेक बन्दों से हैं

وَمَا يَفْعَلُوا؟ مِنْ خَيْرٍ؟ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ؟ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ

और वह जो कुछ नेकी करेंगे उसकी हरगिज़ नाकद्री न की जाएगी और खुदा परहेज़गारों से खूब वाकिफ़ है

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا؟ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئاً؟ وَأُولَئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ؟ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया खुदा (के अज़ाब) से बचाने में हरगिज़ न उनके माल ही कुछ काम आएंगे न उनकी औलाद और यही लोग जहन्नुमी हैं और हमेशा उसी में रहेंगे

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ؟ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ؟
ظَلَمُوا؟ أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ؟ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में ये लोग जो कुछ (खिलाफ़ शरा) खर्च करते हैं उसकी मिसाल अन्धड़ की मिसाल है जिसमें बहुत पाला हो और वह उन लोगों के खेत पर जा पड़े जिन्होंने (कुफ़्र की वजह से) अपनी जानों पर सितम ढाया हो और फिर पाला उसे मार के (नास कर दे) और खुदा ने उनपर जुल्म कुछ नहीं किया बल्कि उन्होंने आप अपने ऊपर जुल्म किया

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَّخِذُوا ۚ بَطَانَةَ ۚ مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا ۚ وَدُّوا ۚ مَا عَنَتُمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ ۚ إِن كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ

ऐ ईमानदारों अपने (मोमिनीन) के सिवा (गैरो को) अपना राज़दार न बनाओ (क्योंकि) ये गैर लोग तुम्हारी बरबादी में कुछ उठा नहीं रखेंगे (बल्कि जितना ज्यादा तकलीफ़) में पड़ोगे उतना ही ये लोग खुश होंगे दुश्मनी तो उनके मुंह से टपकती है और जो (बुग़ज़ व हसद) उनके दिलों में भरा है वह कहीं उससे बढ़कर है हमने तुमसे (अपने) एहकाम साफ़ साफ़ बयान कर दिये अगर तुम समझ रखते हो

هَآأَنْتُمْ أَوْ ۚ لَآءُ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ ۚ وَإِذَا لِقُوكُمْ قَالُوا ۚ

ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوْا ۚ عَصَوْا ۚ عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ مُوتُوا ۚ بَغْيِظِكُمْ ۚ إِنَّ

اللَّهَ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

ऐ लोगों! तुम ऐसे (सीधे) हो कि तुम उनसे उलफ़त रखतो हो और वह तुम्हें (ज़रा भी) नहीं चाहते और तुम तो पूरी किताब (खुदा) पर ईमान रखते हो और वह ऐसे नहीं हैं (मगर) जब तुमसे मिलते हैं तो कहने लगते हैं कि हम भी ईमान लाए और जब अकेले में होते हैं तो तुम पर गुस्से के मारे उंगलियों काटते हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (काटना क्या) तुम अपने गुस्से में जल मरो जो बातें तुम्हारे दिलों में हैं बेशक खुदा ज़रूर जानता है

إِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ ۖ تَسُوهُمْ وَإِنْ تُصِيبْكُمْ سَيِّئَةٌ ۖ يَفْرَحُوا بِهَا ۚ وَإِنْ تَصْبِرُوا ۚ وَتَتَّقُوا ۚ لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۚ

(ऐ ईमानदारों) अगर तुमको भलाई छू भी गयी तो उनको बुरा मालूम होता है और जब तुमपर कोई भी मुसीबत पड़ती है तो वह खुश हो जाते हैं और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी इस्तेयार करो तो उनका फ़रेब तुम्हें कुछ भी ज़रर नहीं पहुंचाएगा (क्योंकि) खुदा तो उनकी कारस्तानियों पर हावी है

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقْعَدَ لِلْقِتَالِ ۖ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٢٨

और (ऐ रसूल) एक वक्त वो भी था जब तुम अपने बाल बच्चों से तड़के ही निकल खड़े हुए और मोमिनीन को लड़ाई के मोर्चों पर बिठा रहे थे और खुदा सब कुछ जानता और सुनता है

إِذْ هَمَّتْ طَّائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

ये उस वक्त का वाक्या है जब तुममें से दो गिरोहों ने ठान लिया था कि पसपाई करें और फिर (सँभल गए) क्योंकि खुदा तो उनका सरपरस्त था और मोमिनीन को खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिये

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ ۚ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

यकीनन खुदा ने जंगे बदर में तुम्हारी मदद की (बावजूद के) तुम (दुश्मन के मुकाबले में) बिल्कुल बे हकीकत थे (फिर भी) खुदा ने फतेह दी

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آفٍ ۚ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ

पस तुम खुदा से डरते रहो ताकि (उनके) शुक्रगुजार बनो (ऐ रसूल) उस वक्त तुम मोमिनीन से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा परवरदिगार तीन हज़ार फ़रिश्ते आसमान से भेजकर तुम्हारी मदद करे हों (ज़रूर काफ़ी है)

بَلَىٰ ۚ إِنْ تَصْبِرُوا ۚ وَتَتَّقُوا ۚ وَيَأْتُوكُمْ مِنْ فُورِهِمْ هَذَا يُمِدِّكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آفٍ ۚ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ

बल्कि अगर तुम साबित क़दम रहो और (रसूल की मुखालेफ़त से) बचो और कुफ़ार अपने (जोश में) तुमपर चढ़ भी आये तो तुम्हारा परवरदिगार ऐसे पाँच हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा जो निशाने जंग लगाए हुए डटे होंगे और खुदा ने ये मदद सिर्फ़ तुम्हारी खुशी के लिए की है

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

और ताकि इससे तुम्हारे दिल की ढारस हो और (ये तो ज़ाहिर है कि) मदद जब होती है तो खुदा ही की तरफ़ से जो सब पर ग़ालिब (और) हिकमत वाला है

لِيَقْطَعَ طَرَفًا ۚ أَوْ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوا ۚ خَائِبِينَ

(और यह मदद की भी तो) इसलिए कि काफ़िरों के एक गिरोह को कम कर दे या ऐसा चौपट कर दे कि (अपना सा) मुंह लेकर नामुराद अपने घर वापस चले जायें

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ

(ऐ रसूल) तुम्हारा तो इसमें कुछ बस नहीं चाहे खुदा उनकी तौबा कुबूल करे या उनको सज़ा दे क्योंकि वह ज़ालिम तो ज़रूर हैं

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब खुदा ही का है जिसको चाहे बख्शे और जिसको चाहे सज़ा करे और खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबार है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمُ الرِّبَا ۖ أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

ऐ ईमानदारों! सूद दनादन खाते न चले जाओ और खुदा से डरो कि तुम छुटकारा पाओ

وَاتَّقُوا ۚ النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ

और जहन्नम की उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है

وَأَطِيعُوا ۚ اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

और खुदा और रसूल की फ़रमाबरदारी करो ताकि तुम पर रहम किया जाए

ۚ وَسَارِعُوا ۚ إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ ۚ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ

और अपने परवरदिगार के (सबब) बख्शिश और जन्नत की तरफ़ दौड़ पड़ो जिसकी (वुसअत सारे) आसमान और ज़मीन के बराबर है और जो परहेज़गारों के लिये मुहय्या की गयी है

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكُظُمِينَ الْغَيْظِ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

जो खुशहाली और कठिन वक्त में भी (खुदा की राह पर) खर्च करते हैं और गुस्से को रोकते हैं और लोगों (की खता) से दरगुज़र करते हैं और नेकी करने वालों से अल्लाह उलफ़त रखता है

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا ۖ فَحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا ۖ أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا ۖ اللَّهُ فَاسْتَغْفَرُوا ۖ لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا ۖ عَلَىٰ مَا فَعَلُوا ۖ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

और लोग इत्तिफ़ाक़ से कोई बदकारी कर बैठते हैं या आप अपने ऊपर जुल्म करते हैं तो खुदा को याद करते हैं और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं और खुदा के सिवा गुनाहों का बख़्शने वाला और कौन है और जो (कूसूर) वह (नागहानी) कर बैठे तो जानबूझ कर उसपर हट नहीं करते

أَوْ ۖ لَكَ جَزَاؤُهُمْ مَغْفِرَةً ۖ مِنْ رَبِّهِمْ وَجَنَّتْ ۖ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَنِعَمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ

ऐसे ही लोगों की जज़ा उनके परवरदिगार की तरफ़ से बख़्शिश है और वह बागात है जिनके नीचे नहरें जारी हैं कि वह उनमें हमेशा रहेंगे और (अच्छे) चलन वालों की (भी) ख़ूब खरी मज़दूरी है

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَسِيرُوا ۖ فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا ۖ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُكْذِبِينَ

तुमसे पहले बहुत से वाक़यात गुज़र चुके हैं पस ज़रा रूए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि (अपने अपने वक्त के पैग़म्बरों को) झुठलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ

هَذَا بَيَانٌ ۖ لِلنَّاسِ وَهُدًى ۖ وَمَوْعِظَةٌ ۖ لِلْمُتَّقِينَ

ये (जो हमने कहा) आम लोगों के लिए तो सिर्फ़ बयान (वाक़या) है मगर और परहेज़गारों के लिए हिदायत व नसीहत है

وَلَا تَهْنُوا ۚ وَلَا تَحْزَنُوا ۚ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

और मुसलमानों का हिली न करो और (इस) इत्तफ़ाक़ी शिकस्त (ओहद से) कुदो नहीं (क्योंकि) अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो तुम ही ग़ालिब और वर रहोगे

إِنْ يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ ۖ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ

अगर (जंगे ओहद में) तुमको ज़ख्म लगा है तो उसी तरह (बदर में) तुम्हारे फ़रीक़ (कुफ़ार को) भी ज़ख्म लग चुका है (उस पर उनकी हिम्मत तो न टूटी) ये इत्तफ़ाक़ाते ज़माना हैं जो हम लोगों के दरमियान बारी बारी उलट फेर किया करते हैं और ये (इत्तफ़ाक़ी शिकस्त इसलिए थी) ताकि खुदा सच्चे ईमानदारों को (ज़ाहिरी) मुसलमानों से अलग देख लें और तुममें से बाज़ को दरज़ाए शहादत पर फ़ायज़ करें और खुदा (हुक्मे रसूल से) सरताबी करने वालों को दोस्त नहीं रखता

وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ وَيَمْحَقَ الْكُفْرِينَ

और ये (भी मंज़ूर था) कि सच्चे ईमानदारों को (साबित क़दमी की वज़ह से) निरा खरा अलग कर ले और नाफ़रमानों (भागने वालों) का मटियामेट कर दे

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا ۖ الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا ۖ مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ

(मुसलमानों) क्या तुम ये समझते हो कि सब के सब बहिश्त में चले ही जाओगे और क्या खुदा ने अभी तक तुममें से उन लोगों को भी नहीं पहचाना जिन्होंने जेहाद किया और न साबित क़दम रहने वालों को ही पहचाना

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ

तुम तो मौत के आने से पहले (लड़ाई में) मरने की तमन्ना करते थे बस अब तुमने उसको अपनी आँख से देख लिया और तुम अब भी देख रहे हो

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَآيَةً ۚ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا ۚ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ

(फिर लड़ाई से जी क्यों चुराते हो) और मोहम्मद तो सिर्फ रसूल हैं (खुदा नहीं) इनसे पहले बहुतेरे पैगम्बर गुज़र चुके हैं फिर क्या अगर मोहम्मद अपनी मौत से मर जाँए या मार डाले जाएं तो तुम उलटे पाँव (अपने कुफ़्र की तरफ़) पलट जाओगे और जो उलटे पाँव फिरेगा (भी) तो (समझ लो) हरगिज़ खुदा का कुछ भी नहीं बिगड़ेगा और अनकरीब खुदा का शुक्र करने वालों को अच्छा बदला देगा

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ كِتَابٌ مُّوجَّلٌ ۚ ۚ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ ۚ مِنْهَا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ آخِرَةِ نُؤْتِهِ ۚ مِنْهَا ۚ وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ

और बगैर हुक्मे खुदा के तो कोई शख्स मर ही नहीं सकता वक्ते मुअय्यन तक हर एक की मौत लिखी हुई है और जो शख्स (अपने किए का) बदला दुनिया में चाहे तो हम उसको इसमें से दे देते हैं और जो शख्स आखिरत का बदला चाहे उसे उसी में से देंगे और (नेअमत ईमान के) शुक्र करने वालों को बहुत जल्द हम जज़ाए खैर देंगे

وَكَايْنٍ مِّنْ نَّبِيِّ ۖ قُتِلَ مَعَهُ ۚ رِبِّيُّونَ كَثِيرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوا ۚ لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَمَا ضَعُفُوا ۚ وَمَا أَسْتَكَاثُوا ۚ ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ

और (मुसलमानों तुम ही नहीं) ऐसे पैगम्बर बहुत से गुज़र चुके हैं जिनके साथ बहुतेरे अल्लाह वालों ने (राहे खुदा में) जेहाद किया और फिर उनको खुदा की राह में जो मुसीबत पड़ी है न तो उन्होंने हिम्मत हारी न बोदापन किया (और न दुश्मन के सामने) गिड़गिड़ाते लगे और साबित क़दम रहने वालों से खुदा उलफ़त रखता है

وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا ۚ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

और लुत्फ़ ये है कि उनका क़ौल इसके सिवा कुछ न था कि दुआएं माँगने लगे कि ऐ हमारे पालने वाले हमारे गुनाह और अपने कामों में हमारी ज्यादतियाँ माफ़ कर और दुश्मनों के मुक़ाबले में हमको साबित क़दम रख और काफ़िरों के गिरोह पर हमको फ़तेह दे

فَاتَّهَمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

तो खुदा ने उनको दुनिया में बदला (दिया) और आखिरत में अच्छा बदला ईनायत फ़रमाया और खुदा ने की करने वालों को दोस्त रखता (ही) है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِن تَطِيعُوا ۚ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ يَرُدُّوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا ۚ خُسِرِينَ

ऐ ईमानदारों अगर तुम लोगों ने काफ़िरों की पैरवी कर ली तो (याद रखो) वह तुमको उलटे पाँव (कुफ़्र की तरफ़) फेर कर ले जाएंगे फिर उलटे तुम ही घाटे में आ जाओगे

بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ

(तुम किसी की मदद के मोहताज नहीं) बल्कि खुदा तुम्हारा सरपरस्त है और वह सब मददगारों से बेहतर है

سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا ۚ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ ۚ سُلْطٰنًا ۚ وَمَا لَهُمُ النَّارُ ۚ وَبِئْسَ مَثْوٰى الظَّالِمِينَ

(तुम घबराओ नहीं) हम अनक़रीब तुम्हारा रोब काफ़िरों के दिलों में जमा देंगे इसलिए कि उन लोगों ने खुदा का शरीक बनाया (भी तो) इस चीज़ बुत को जिसे खुदा ने किसी किस्म की हुकूमत नहीं दी और (आखिरकार) उनका ठिकाना दौज़ख़ है और ज़ालिमों का (भी क्या) बुरा ठिकाना है

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ إِذْ تَحُسُّونَهُم بِأِذْنِهِ ۚ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَزَّعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْ ۚ بَعْدِ مَا أَرَاكُمْ مَا تُحِبُّونَ ۚ ۚ مِّنْكُمْ مَّنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۚ ۚ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ

बेशक खुदा ने (जंगे औहद में भी) अपना (फतेह का) वायदा सच्चा कर दिखाया था जब तुम उसके हुक्म से (पहले ही हमले में) उन (कुफ़ार) को खूब क़त्ल कर रहे थे यहाँ तक की तुम्हारे पसन्द की चीज़ (फ़तेह) तुम्हें दिखा दी उसके बाद भी तुमने (माले ग़नीमत देखकर) बुज़दिलापन किया और हुक्मों रसूल (मोर्चे पर जमे रहने) झगड़ा किया और रसूल की नाफ़रमानी की तुममें से कुछ तो तालिबे दुनिया हैं (कि माले ग़नीमत की तरफ़) से झुक पड़े और कुछ तालिबे आखिरत (कि रसूल पर अपनी जान फ़िदा कर दी) फिर (बुज़दिलेपन ने) तुम्हें उन (कुफ़ार) की की तरफ से फेर दिया (और तुम भाग खड़े हुए) उससे खुदा को तुम्हारा (ईमान अख़लासी) आज़माना मंज़ूर था और (उसपर भी) खुदा ने तुमसे दरगुज़र की और खुदा मोमिनीन पर बड़ा फ़ज़ल करने वाला है

ۚ ۚ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلَوْنَ ۚ ۚ عَلَىٰ أَحَدٍ ۚ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أَخْرَاكُمْ فَأَتَيْتُمْ غَمًّا ۚ ۚ ۚ ۚ لِّكَيْلًا تَحْزَنُوا ۚ ۚ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَبَكُمْ ۚ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ ۚ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

(मुसलमानों तुम) उस वक्त को याद करके शर्माओ जब तुम (बदहवास) भागे पहाड़ पर चले जाते थे पस (चूँकि) रसूल को तुमने (आज़ारदा) किया खुदा ने भी तुमको (इस) रंज की सज़ा में (शिकस्त का) रंज दिया ताकि जब कभी तुम्हारी कोई चीज़ हाथ से जाती रहे या कोई मुसीबत पड़े तो तुम रंज न करो और सब्र करना सीखो और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे ख़बरदार है

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً ۖ نُعَاسًا ۖ يَغْشَىٰ طَائِفَةً ۖ مِّنْكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ ۖ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجُهْلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ ۗ ۚ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۚ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۚ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ ۗ مَا قُتِلْنَا هُنَا ۚ قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

फिर खुदा ने इस रंज के बाद तुमपर इत्मिनान की हालत तारी की कि तुममें से एक गिरोह का (जो सच्चे ईमानदार थे) खूब गहरी नींद आ गयी और एक गिरोह जिनको उस वक्त भी (भागने की शर्म से) जान के लाले पड़े थे खुदा के साथ (स्वाह मस्वाह) ज़मानाए जिहालत की ऐसी बदगुमानियों करने लगे और कहने लगे भला क्या ये अम्र (फ़तेह) कुछ भी हमारे इस्तियार में है (ऐ रसूल) कह दो कि हर अम्र का इस्तियार खुदा ही को है (ज़बान से तो कहते ही हैं नहीं) ये अपने दिलों में ऐसी बातें छिपाए हुए हैं जो तुमसे ज़ाहिर नहीं करते (अब सुनो) कहते हैं कि इस अम्र (फ़तेह) में हमारा कुछ इस्तियार होता तो हम यहाँ मारे न जाते (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि तुम अपने घरों में रहते तो जिन जिन की तकदीर में लड़के मर जाना लिखा था वह अपने (घरो से) निकल निकल के अपने मरने की जगह ज़रूर आ जाते और (ये इस वास्ते किया गया) ताकि जो कुछ तुम्हारे दिल में है उसका इम्तिहान कर दे और खुदा तो दिलों के राज़ खूब जानता है

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا ۖ مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۚ ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۚ

बेशक जिस दिन (जंगे औहद में) दो जमाअतें आपस में गुथ गयीं उस दिन जो लोग तुम (मुसलमानों) में से भाग खड़े हुए (उसकी वजह ये थी कि) उनके बाज़ गुनाहों (मुख़ालफ़ते रसूल) की वजह से शैतान ने बहका के उनके पाँव उखाड़ दिए और (उसी वक्त तो) खुदा ने ज़रूर उनसे दरगुज़र की बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला बुर्दवार है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَكُونُوا ۚ كَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَقَالُوا ۚ لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا ۚ فِي
 الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا ۚ غُزًى ۚ لَوْ كَانُوا ۚ عِنْدَنَا مَا مَاتُوا ۚ وَمَا قُتِلُوا ۚ لِيَجْعَلَ اللَّهُ
 ذَلِكَ حَسْرَةً ۚ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ يُحْيِي ۚ وَيُمِيتُ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ

ऐ ईमानदारों उन लोगों के ऐसे न बनो जो काफ़िर हो गए भाई बन्द उनके परदेस में निकले हैं या जेहाद करने गए हैं (और वहाँ) मर (गए) तो उनके बारे में कहने लगे कि वह हमारे पास रहते तो न मरते ओर न मारे जाते (और ये इस वजह से कहते हैं) ताकि खुदा (इस ख्याल को) उनके दिलों में (बाइसे) हसरत बना दे और (यूँ तो) खुदा ही जिलाता और मारता है और जो कुछ तुम करते हो खुदा उसे देख रहा है

وَلَيْنَ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ ۚ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ ۚ مِّمَّا يَجْمَعُونَ

और अगर तुम खुदा की राह में मारे जाओ या (अपनी मौत से) मर जाओ तो बेशक खुदा की बख्शिश और रहमत इस (माल व दौलत) से जिसको तुम जमा करते हो ज़रूर बेहतर है

وَلَيْنَ مُتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ

और अगर तुम (अपनी मौत से) मरो या मारे जाओ (आखिरकार) खुदा ही की तरफ़ (कब्रों से) उठाए जाओगे

فَبِمَا رَحْمَةٍ ۚ مِّنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَأَنفَضُّوا ۚ مِّنْ
 حَوْلِكَ ۚ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۚ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ
 عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ

(तो ऐ रसूल ये भी) खुदा की एक मेहरबानी है कि तुम (सा) नरमदिल (सरदार) उनको मिला और तुम अगर बदमिज़ाज और सख्त दिल होते तब तो ये लोग (खुदा जाने कब के) तुम्हारे गिर्द से तितर बितर हो गए होते पस (अब भी) तुम उनसे दरगुज़र करो और उनके लिए मग़फ़ेरा की दुआ माँगो और (साबिक़ दस्तूरे ज़ाहिरा) उनसे काम काज में मशवरा कर लिया करो (मगर) इस पर भी जब किसी काम को ठान लो तो खुदा ही पर भरोसा रखो (क्योंकि जो लोग खुदा पर भरोसा रखते हैं खुदा उनको ज़रूर दोस्त रखता है)

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِنْ ۚ
بَعْدِهِ ۚ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

(मुसलमानों याद रखो) अगर खुदा ने तुम्हारी मदद की तो फिर कोई तुमपर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर खुदा तुमको छोड़ दे तो फिर कौन ऐसा है जो उसके बाद तुम्हारी मदद को खड़ा हो और मोमिनीन को चाहिये कि खुदा ही पर भरोसा रखें

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ ۚ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ
نَفْسٍ ۚ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

और (तुम्हारा गुमान बिल्कुल ग़लत है) किसी नबी की (हरगिज़) ये शान नहीं कि ख़यानत करे और ख़यानत करेगा तो जो चीज़ ख़यानत की है क़यामत के दिन वही चीज़ (बिल्कुल वैसा ही) खुदा के सामने लाना होगा फिर हर शख्स अपने किए का पूरा पूरा बदला पाएगा और उनकी किसी तरह हक़तल्फ़ी नहीं की जाएगी

أَفَمَنْ أَتَّبَعَ رِضْوَنَ اللَّهِ كَمَنْ ۚ بَاءَ بِسَخَطٍ ۚ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ

भला जो शख्स खुदा की खुशनूदी का पाबन्द हो क्या वह उस शख्स के बराबर हो सकता है जो खुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो और जिसका ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरा ठिकाना है

هُمْ دَرَجَتٌ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۚ بِمَا يَعْمَلُونَ

वह लोग खुदा के यहाँ मुस्तलिफ़ दरजों के हैं और जो कुछ वह करते हैं खुदा देख रहा है

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا ۚ مِنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُوا ۚ عَلَيْهِمْ
آيَاتِهِ ۚ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا ۚ مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ

खुदा ने तो ईमानदारों पर बड़ा एहसान किया कि उनके वास्ते उन्हीं की क़ौम का एक रसूल भेजा जो उन्हें खुदा की आयतें पढ़ पढ़ के सुनाता है और उनकी तबीयत को पाकीज़ा करता है और उन्हें किताबे (खुदा) और अक्ल की बातें सिखाता है अगरचे वह पहले खुली हुई गुमराही में पड़े थे

أَوَلَمَّا أَصَبْتُمْ مُمْسِيَةً ۚ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّى هَذَا ۚ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ
أَنْفُسِكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

मुसलमानों क्या जब तुमपर (जंगे ओहद) में वह मुसीबत पड़ी जिसकी दूनी मुसीबत तुम (कुफ़ार पर) डाल चुके थे तो (घबरा के) कहने लगे ये (आफ़त) कहाँ से आ गयी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ये तो खुद तुम्हारी ही तरफ़ से है (न रसूल की मुखालेफ़त करते न सज़ा होती) बेशक खुदा हर चीज़ पर कादिर है

وَمَا أَصَبَكُمْ يَوْمَ التَّقَىٰ الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ

और जिस दिन दो जमाअतें आपस में गुंथ गयीं उस दिन तुम पर जो मुसीबत पड़ी वह तुम्हारी शरारत की वजह से (खुदा के इजाजत की वजह से आयी) और ताकि खुदा सच्चे ईमान वालों को देख ले

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا ۚ قَتِلُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ ادْفَعُوا ۚ ۚ
قَالُوا ۚ لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا ۚ لَا تَبْعُنْكُمُ ۚ هُمْ لِلْكَفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَنِ ۚ يَقُولُونَ
بِأَفْوَاهِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ

और मुनाफ़िकों को देख ले (कि कौन है) और मुनाफ़िकों से कहा गया कि आओ खुदा की राह में जेहाद करो या (ये न सही अपने दुश्मन को) हटा दो तो कहने लगे (हाए क्या कहीं) अगर हम लड़ना जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते ये लोग उस दिन बनिस्बते ईमान के कुफ़र के ज्यादा करीब थे अपने मुंह से वह बातें कह देते हैं जो उनके दिल में (खाक) नहीं होतीं और जिसे वह छिपाते हैं खुदा उसे खूब जानता है

الَّذِينَ قَالُوا ۚ لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا ۚ لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۚ ۚ قُلْ فَادْرَءُوا ۚ عَنْ
أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(ये वही लोग हैं) जो (आप चैन से घरों में बैठे रहते हैं और अपने शहीद) भाईयों के बारे में कहने लगे काश हमारी पैरवी करते तो न मारे जाते (ऐ रसूल) उनसे कहो (अच्छा) अगर तुम सच्चे हो तो ज़रा अपनी जान से मौत को टाल दो

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ

और जो लोग खुदा की राह में शहीद किए गए उन्हें हरगिज़ मुर्दा न समझना बल्कि वह लोग जीते जागते मौजूद हैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से वह (तरह तरह की) रोज़ी पाते हैं

فَرِحِينَ بِمَا ءَاتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا ۙ بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

और खुदा ने जो फ़ज़ल व करम उन पर किया है उसकी (खुशी) से फूले नहीं समाते और जो लोग उनसे पीछे रह गए और उनमें आकर शामिल नहीं हुए उनकी निस्वत ये (ख्याल करके) खुशियाँ मनाते हैं कि (ये भी शहीद हों तो) उनपर न किसी किस्म का ख़ौफ़ होगा और न आज़ुर्दा खातिर होंगे

ۙ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ ۙ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ

खुदा ने अमत् और उसके फ़ज़ल (व करम) और इस बात की खुशख़बरी पाकर कि खुदा मोमिनीन के सवाब को बरबाद नहीं करता

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا ۙ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ ۙ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا ۙ مِنْهُمْ وَاتَّقُوا ۚ أَجْرٌ عَظِيمٌ

निहाल हो रहे हैं (जंगे ओहद में) जिन लोगों ने जख्म खाने के बाद भी खुदा और रसूल का कहना माना उनमें से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की (सब के लिये नहीं सिर्फ) उनके लिये बड़ा सवाब है

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا ۙ لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا ۙ وَقَالُوا ۙ حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ

यह वह हैं कि जब उनसे लोगों ने आकर कहना शुरू किया कि (दुश्मन) लोगों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के) वास्ते (बड़ा लश्कर) जमा किया है पस उनसे डरते (तो बजाए ख़ौफ़ के) उनका ईमान और ज्यादा हो गया और कहने लगे (होगा भी) खुदा हमारे वास्ते काफ़ी है

فَأَنْقَلَبُوا ۙ بِنِعْمَةٍ ۙ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۚ لَمْ يَمَسْسَهُمْ سُوءُ ۙ وَاتَّبَعُوا ۙ رِضْوَانَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ

और वह क्या अच्छा कारसाज़ है फिर (या तो हिम्मत करके गए मगर जब लड़ाई न हुई तो) ये लोग खुदा की नेअमत् और फ़ज़ल के साथ (अपने घर) वापस आए और उन्हें कोई बुराई छू भी नहीं गयी और खुदा की खुशनूदी के पाबन्द रहे और खुदा बड़ा फ़ज़ल करने वाला है

إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَآءَهُ ۚ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونَ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

यह (मुख्बिर) बस शैतान था जो सिर्फ अपने दोस्तों को (रसूल का साथ देने से) डराता है पस तुम उनसे तो डरो नहीं अगर सच्चे मोमिन हो तो मुझ ही से डरते रहो

وَلَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسْرِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَن يَضُرُّوهُ ۚ اللَّهُ شَهِيدٌ ۚ يُرِيدُ اللَّهُ
أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حِزْبًا ۚ فِي آخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

और (ऐ रसूल) जो लोग कुफ्र की (मदद) में पेश कदमी कर जाते हैं उनकी वजह से तुम रन्ज न करो क्योंकि ये लोग खुदा को कुछ जरूर नहीं पहुँचा सकते (बल्कि) खुदा तो ये चाहता है कि आखिरत में उनका हिस्सा न करार दे और उनके लिए बड़ा (सख्त) अज़ाब है

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوْا ۚ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن يَضُرُّوهُ ۚ اللَّهُ شَهِيدٌ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

बेशक जिन लोगों ने ईमान के एवज़ कुफ्र खरीद किया वह हरगिज़ खुदा का कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे (बल्कि आप अपना) और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أَنَّمَا نُمِلَىٰ لَهُمْ خَيْرٌ ۚ لَّأَنفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمِلَىٰ لَهُمْ
لِيُزَادُوا ۚ إِنَّمَا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۚ

और जिन लोगों ने कुफ्र इस्तिथार किया वह हरगिज़ ये न ख्याल करें कि हमने जो उनको मोहलत व बेफिक्री दे रखी है वह उनके हक़ में बेहतर है (हालाँकि) हमने मोहल्लत व बेफिक्री सिर्फ इस वजह से दी है ताकि वह और खूब गुनाह कर लें और (आखिर तो) उनके लिए रूसवा करने वाला अज़ाब है

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۚ
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ رُسُلِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ
فَأْمِنُوا ۚ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ ۚ وَإِنْ تُوْمِنُوا ۚ وَتَتَّقُوا ۚ فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ

(मुनाफ़िकों) खुदा ऐसा नहीं कि बुरे भले की तमीज़ किए बगैर जिस हालत पर तुम हो उसी हालत पर मोमिनों को भी छोड़ दे और खुदा ऐसा भी नहीं है कि तुम्हें गैब की बातें बता दे मगर (हाँ) खुदा अपने रसूलों में जिसे चाहता है (गैब बताने के वास्ते) चुन लेता है पस खुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो तुम्हारे वास्ते बड़ी जज़ाए खैर है

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا ءَاتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ هُوَ خَيْرٌ ۚ لَّهُمْ ۚ بَلْ هُوَ
شَرٌّ ۚ لَّهُمْ ۚ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا ۚ بِهِ ۚ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۚ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ

और जिन लोगों को खुदा ने अपने फ़ज़ल (व करम) से कुछ दिया है (और फिर) बुख़ल करते हैं वह हरगिज़ इस ख्याल में न रहें कि ये उनके लिए (कुछ) बेहतर होगा बल्कि ये उनके हक़ में बदतर है क्योंकि जिस (माल) का बुख़ल करते हैं अनक़रीब ही क़यामत के दिन उसका तौक़ बनाकर उनके गले में पहनाया जाएगा और सारे आसमान व ज़मीन की मीरास खुदा ही की है और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे ख़बरदार है

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ ۚ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۚ سَنَكْتُبُ مَا
قَالُوا ۚ وَقَتْلُهُمُ الْأَنْدَ ۚ بِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ وَنَقُولُ ذُوقُوا ۚ عَذَابَ الْحَرِيقِ

जो लोग (यहूद) ये कहते हैं कि खुदा तो कंगाल है और हम बड़े मालदार हैं खुदा ने उनकी ये बकवास सुनी उन लोगों ने जो कुछ किया उसको और उनका पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करना हम अभी से लिख लेते हैं और (आज तो जो जी में कहें मगर क़यामत के दिन) हम कहेंगे कि अच्छा तो लो (अपनी शरारत के एवज़ में) जलाने वाले अज़ाब का मज़ा चखो

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ اَيْدِيْكَمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلّٰمٍ ۚ لِلْعَبِيْدِ

ये उन्हीं कामों का बदला है जिनको तुम्हारे हाथों ने (ज़ादे आख़ेरत बना कर) पहले से भेजा है वरना खुदा तो कभी अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं

الَّذِينَ قَالُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلاَّ نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ ۖ تَأْكُلُهُ
النَّارُ ۚ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ ۖ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن
كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(यह वही लोग हैं) जो कहते हैं कि खुदा ने तो हमसे वायदा किया है कि जब तक कोई रसूल हमें ये (मौजिज़ा) न दिखा दे कि वह कुरबानी करे और उसको (आसमानी) आग आकर चट कर जाए उस वक्त तक हम ईमान न लाएंगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (भला) ये तो बताओ बहुतेरे पैग़म्बर मुझसे क़बल तुम्हारे पास वाजे व रौशन मौजिज़ात और जिस चीज़ की तुमने (उस वक्त) फ़रमाइश की है (वह भी) लेकर आए फिर तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे तो तुमने क्यों क़त्ल किया

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ ۖ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ

(ऐ रसूल) अगर वह इस पर भी तुम्हें झुठलाएं तो (तुम आज्ञार्दा न हो क्योंकि) तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर रौशन मौजिज़े और सहीफे और नूरानी किताब लेकर आ चुके हैं (मगर) फिर भी लोगों ने आखिर झुठला ही छोड़ा

كُلُّ نَفْسٍ ۖ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ وَإِنَّمَا تُوَفَّقُونَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ فَمَن زُحِرَ عَنِ
النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۖ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَّعُ الْغُرُورِ

हर जान एक न एक (दिन) मौत का मज़ा चखेगी और तुम लोग क़यामत के दिन (अपने किए का) पूरा पूरा बदला भर पाओगे पस जो शरूस जहन्नुम से हटा दिया गया और बहिश्त में पहुंचा दिया गया पस वही कामयाब हुआ और दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी धोखे की टट्टी के सिवा कुछ नहीं

لَتُبْلَوْنَ فِيْ أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعَنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا ۖ الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ
الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ أَذًى كَثِيرًا ۖ وَإِن تَصْبِرُوا ۖ وَتَتَّقُوا ۖ فَإِنَّ ذَلِكَ مِّنْ عَزْمِ
الْأُمُورِ

(मुसलमानों) तुम्हारे मालों और जानों का तुमसे ज़रूर इस्तेहान लिया जाएगा और जिन लोगो को तुम से पहले किताबे खुदा दी जा चुकी है (यहूद व नसारा) उनसे और मुशरेकीन से बहुत ही दुख दर्द की बातें तुम्हें ज़रूर सुननी पड़ेंगी और अगर तुम (उन मुसीबतों को) झेल जाओगे और परहेज़गारी करते रहोगे तो बेशक ये बड़ी हिम्मत का काम है

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا ۖ الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ ۖ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ ۖ فَنَبَذُوهُ
وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَأَشْرَتُوا ۖ بِهِ ۖ ثُمَّ ۖ قَلِيلًا ۖ ۖ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ

और (ऐ रसूल) इनको वह वक्त तो याद दिलाओ जब खुदा ने अहले किताब से एहद व पैमान लिया था कि तुम किताबे खुदा को साफ़ साफ़ बयान कर देना और (खबरदार) उसकी कोई बात छुपाना नहीं मगर इन लोगों ने (ज़रा भी ख्याल न किया) और उनको पसे पुश्त फेंक दिया और उसके बदले में (बस) थोड़ी सी कीमत हासिल कर ली पस ये क्या ही बुरा (सौदा) है जो ये लोग खरीद रहे हैं

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا ۖ وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا ۖ بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا ۖ فَلَا
تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ ۖ مِنَ الْعَذَابِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ

(ऐ रसूल) तुम उन्हें ख्याल में भी न लाना जो अपनी कारस्तानी पर इतराए जाते हैं और किया कराया खाक नहीं (मगर) तारीफ़ के खास्तगार (चाहते) हैं पस तुम हरगिज़ ये ख्याल न करना कि इनको अज़ाब से छुटकारा है बल्कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

और आसमान व ज़मीन सब खुदा ही का मुल्क है और खुदा ही हर चीज़ पर कादिर है

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ ۖ لِأُولَٰئِكَ ۖ إِلَى الْأَلْبَابِ

इसमें तो शक ही नहीं कि आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के फेर बदल में अक्लमन्दों के लिए (कुदरत खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيمًا ۖ ۖ وَقُعُودًا ۖ ۖ وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَطْلًا ۖ ۖ سُبْحَنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

जो लोग उठते बैठते करवट लेते (अलगरज़ हर हाल में) खुदा का ज़िक्र करते हैं और आसमानों और ज़मीन की बनावट में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं और (बेसाख्ता) कह उठते हैं कि खुदावन्दा तूने इसको बेकार पैदा नहीं किया तू (फेले अबस से) पाक व पाकीज़ा है बस हमको दोज़क के अज़ाब से बचा

رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۚ

ऐ हमारे पालने वाले जिसको तूने दोज़ख में डाला तो यकीनन उसे रूसवा कर डाला और जुल्म करने वाले का कोई मददगार नहीं

رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَنِ أَنْ ءَامِنُوا ۚ بِرَبِّكُمْ فَأَمَّا ۚ رَبَّنَا فَأَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ

ऐ हमारे पालने वाले (जब) हमने एक आवाज़ लगाने वाले (पैग़म्बर) को सुना कि वह (ईमान के वास्ते यूं पुकारता था) कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए पस ऐ हमारे पालने वाले हमें हमारे गुनाह बख्श दे और हमारी बुराईयों को हमसे दूर करे दे और हमें नेकों के साथ (दुनिया से) उठा ले

رَبَّنَا وَعَاتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

और ऐ पालने वाले अपने रसूलों की मार्फत जो कुछ हमसे वायदा किया है हमें दे और हमें क़यामत के दिन रूसवा न कर तू तो वायदा खिलाफ़ी करता ही नहीं

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَمَلٍ ۚ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ ۚ بَعْضُكُم مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا ۚ وَأُخْرِجُوا ۚ مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُودُوا ۚ فِي سَبِيلِي وَقُتِلُوا ۚ وَقُتِلُوا ۚ لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ ۚ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا ۚ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ ۚ حُسْنُ الثَّوَابِ

तो उनके परवरदिगार ने दुआ कुबूल कर ली और (फ़रमाया) कि हम तुममें से किसी काम करने वाले के काम को अकारत नहीं करते मर्द हो या औरत (उस में कुछ किसी की खुसूसियत नहीं क्योंकि) तुम एक दूसरे (की ज़िन्स) से हो जो लोग (हमारे लिए वतन आवारा हुए) और शहर बदर किए गए और उन्होंने हमारी राह में अज़ीयतें उठायीं और (कुफ़र से) जंग की और शहीद हुए मैं उनकी बुराईयों से ज़रूर दरगुज़र करूंगा और उन्हें बेहिश्त के उन बाग़ों में ले जाऊंगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं खुदा के यहाँ ये उनके किये का बदला है और खुदा (ऐसा ही है कि उस) के यहाँ तो अच्छा ही बदला है

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فِي الْبِلَادِ

(ऐ रसूल) काफ़िरों का शहरों शहरों चैन करते फिरना तुम्हें धोखे में न डाले

مَتَّعٌ ۚ قَلِيلٌ ۚ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ

ये चन्द रोज़ा फ़ायदा हैं फिर तो (आखिरकार) उनका ठिकाना जहन्नुम ही है और क्या ही बुरा ठिकाना है

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ ۚ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا ۚ أَمِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ ۚ لِلْأَبْرَارِ

मगर जिन लोगों ने अपने परवरदिगार की परहेज़गारी (इस्तेयार की उनके लिए बेहिश्त के) वह बाज़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह हमेशा उसी में रहेंगे ये खुदा की तरफ़ से उनकी (दावत है और जो साज़ो सामान) खुदा के यहाँ है वह नेको कारों के वास्ते दुनिया से कहीं बेहतर है

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خُشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ أَوْ لِيُكَفِّرَ عَنْهُمْ أَجْرَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

और अहले किताब में से कुछ लोग तो ऐसे ज़रूर हैं जो खुदा पर और जो (किताब) तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताब) उनपर नाज़िल हुई (सब पर) ईमान रखते हैं खुदा के आगे सर झुकाए हुए हैं और खुदा की आयतों के बदले थोड़ी सी कीमत (दुनियावी फ़ायदे) नहीं लेते ऐसे ही लोगों के वास्ते उनके परवरदिगार के यहाँ अच्छा बदला है बेशक खुदा बहुत जल्द हिसाब करने वाला है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَصْبِرُوا ۚ وَصَابِرُوا ۚ وَرَابِطُوا ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

ऐ ईमानदारों (दीन की तकलीफ़ों को) और दूसरों को बर्दाश्त की तालीम दो और (जिहाद के लिए) कमरें कस लो और खुदा ही से डरो ताकि तुम अपनी दिली मुराद पाओ